# [२३] श्री वृष्णिदशा (उपांग)सूत्रम्

**नमो नमो निम्मलदंसणस्स**

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

## "वृष्णिदशा" मूलं एवं वृत्ति:

**[मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:]**

[आद्य संपादक: - पूज्य अनुयोगाचार्य श्री दानविजयजी गणि म॰ सा॰ ]

(किञ्चित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर **(M.Com., M.Ed., Ph.D.)**

15/01/2015, गुरुवार, २०७१ पौष कृष्ण १०

jain_e_library's Net Publications

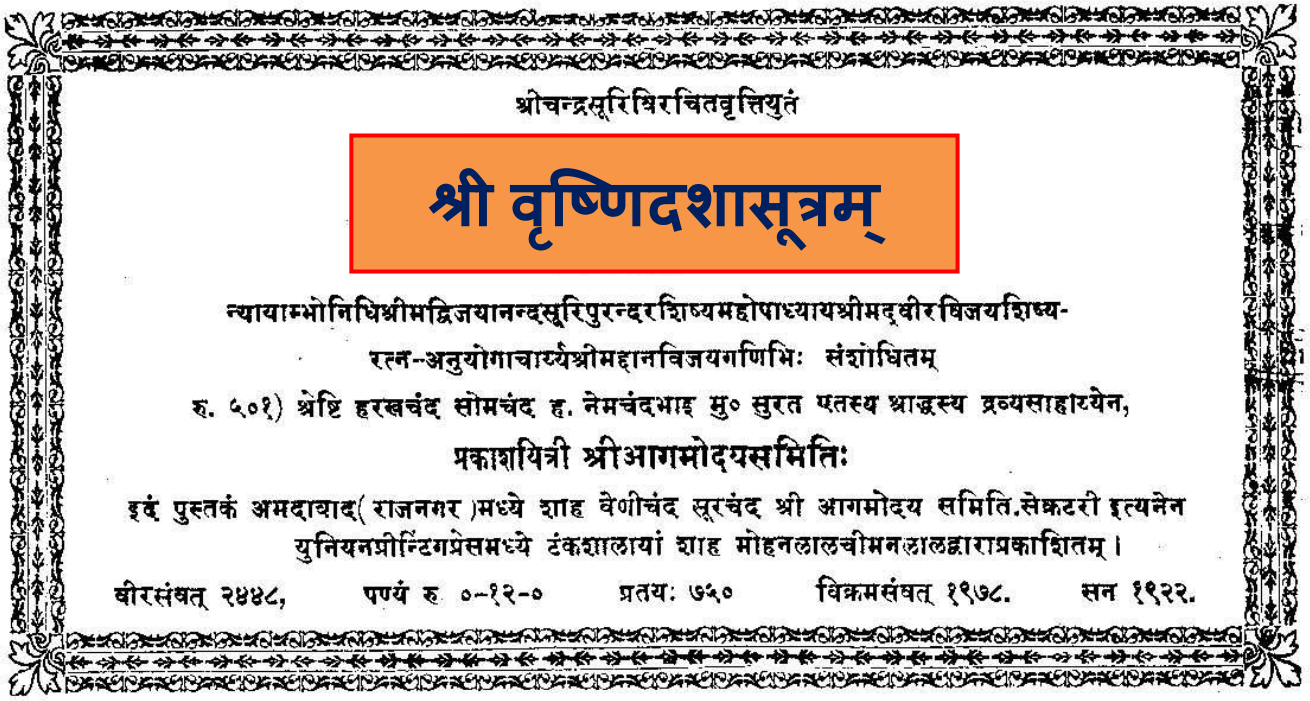

<table>
<tr><td>आगम<br>(२३)</td><td>“वृष्णिदशा” - उपांगसूत्र-१२ (मूलं+वृत्ति:)<br>अध्ययनं [–] ---------------------------------------------------------- मूलं [–]</td></tr>
<tr><td>प्रत<br>सूत्रांक<br>[–]<br><br>दीप<br>अनुक्रम<br>[–]</td><td>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२३], उपांग सूत्र - [१०] “वृष्णिदशा” मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:<br><br>श्रीचन्द्रसूरिविरचितवृत्तियुतं<br><br>श्री वृष्णिदशासूत्रम्<br><br>न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरिपुरन्दरशिष्यमहोपाध्यायश्रीमद्वीरविजयशिष्य-<br>रत्न-अनुयोगाचार्य्यश्रीमद्दानविजयगणिभिः संशोधितम्<br>रु. ५०१) श्रेष्ठि हरखचंद सोमचंद ह. नेमचंदभाइ मु० सुरत एतस्य श्राद्धस्य द्रव्यसाहाय्येन,<br>प्रकाशयित्री श्रीआगमोदयसमितिः<br>इदं पुस्तकं अमदावाद( राजनगर )मध्ये शाह वेणीचंद सूरचंद श्री आगमोदय समिति.सेक्रटरी इत्यनेन<br>युनियनप्रीन्टिंगप्रेसमध्ये टंकशालायां शाह मोहनलालचीमनलालद्वाराप्रकाशितम् ।<br>वीरसंवत् २४४८, पण्यं रु ०-१२-० प्रतयः ७५० विक्रमसंवत् १९७८. सन १९२२.<br><br>Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org</td></tr>
<tr><td></td><td>वृष्णिदशा-उपाङ्गसूत्रस्य मूल “टाइटल पेज”</td></tr>
</table>

| मूलांक: | अध्ययनं | पृष्ठांक: | | मूलांक: | अध्ययनं | पृष्ठांक: | | मूलांक: | अध्ययनं | पृष्ठांक: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ००१ | [१] निषध | ००४ | | ००४ | [२-१२] मायनि आदि ११ | ०१० | | ---- | ---------- | ---- |

## ['वृष्णिदशा' - मूलं एवं वृत्तिः] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "निरयावलिका" के नामसे सन १९२ २ (विक्रम संवत १९७ ८) में आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद अनुयोगाचार्य श्री दानविजयजी गणि महाराज साहेब | इसमे 'निरयावलिका,कल्पवतंसिका,पुष्पिता,पुष्पचुलिका,वृष्णिदशा' पांच उपांग थे.

इसी प्रत को फिर से दुसरे पूज्यश्रीओने अपने-अपने नामसे भी छपवाई, जिसमे उन्होंने खुदने तो कुछ नहीं किया, मगर इसी प्रत को ऑफसेट करवा के, अपना एवं अपनी प्रकाशन संस्था का नाम छाप दिया. जिसमे किसीने पूज्यपाद् सागरानंदसूरिजी के नाम को आगे रखा, और अपनी वफादारी दिखाई, तो किसीने स्वयं को ही इस पुरे कार्य का कर्ता बता दिया और संपादकपूज्यश्री तथा प्रकाशक का नाम ही मिटा दिया |

✣ **हमारा ये प्रयास क्यों?** ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, **४५-आगम सटीक** भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की *[पूर्वाचार्य]* पूज्य श्री के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक **स्पेशियल फोरमेट** बनवाया, जिसमे बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर **शीर्षस्थानमे** आगम का नाम, फिर अध्ययन और मूलसूत्र के क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन एवं सूत्र चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ **आगम** का **क्रम** और इसी **प्रत** का **सूत्रक्रम** दिया है, उसके साथ वहाँ **'दीप अनुक्रम'** भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रो के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ **कौंस [-]** दिए है और जहां गाथा है वहाँ **||-||** ऐसी **दो लाइन** खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे **विशिष्ठ फूटनोट** भी लिखी है, जहां उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन-भूल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है| **.....मुनि दीपरत्नसागर.....**

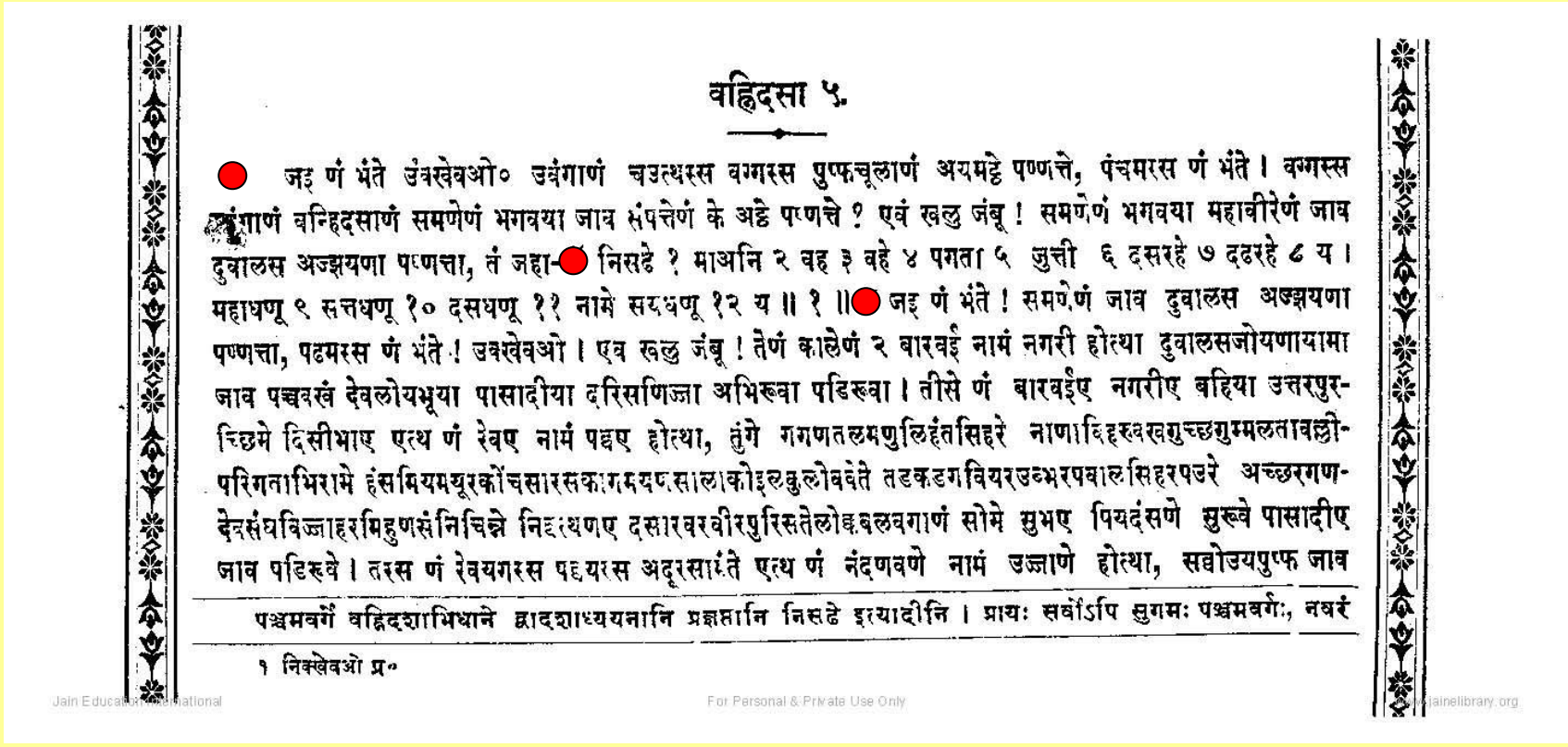

प्रत सूत्रांक [--] दीप अनुक्रम [१-३]



## वह्निदसा ५.

● जइ णं भंते उंक्खेवओ० उवंगाणं चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते। वग्गस्स उवंगाणं वन्हिदसाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-● निसढे १ माअनि २ वह ३ वहे ४ पगता ५ जुत्ती ६ दसरहे ७ दढरहे ८ य। महाधणू ९ सत्तधणू १० दसधणू ११ नामे सयधणू १२ य ॥ १ ॥● जइ णं भंते ! समणेणं जाव दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! उक्खेवओ। एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ बारवई नामं नगरी होत्था दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोयभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तीसे णं बारवईए नगरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं रेवए नामं पव्वए होत्था, तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविहरुक्खगुच्छगुम्मलतावल्लीपरिगताभिरामे हंसमियमयूरकोंचसारसकागमयणसालाकोइलकुलोववेते तडकडगवियरउज्झरपवालसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघविज्जाहरमिहुणसंनिचिन्ने निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाणं सोमे सुभए पियदंसणे सुरूवे पासादीए जाव पडिरूवे। तस्स णं रेवयगस्स पव्वयस्स अदूरसामंते एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फ जाव

पञ्चमवर्गे वह्निदशाभिधाने द्वादशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि निसढे इत्यादीनि। प्रायः सर्वोऽपि सुगमः पञ्चमवर्गः, नवरं

१ निक्खेवओ प्र०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

● अत्र अध्ययन-१- 'निषध' आरभ्यते [मूलसूत्र १-३]

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [१-३]



दरिसणिज्जे । तत्थ णं नंदणवणे उज्जाणे सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था चिराईए जाव बहुजणो आगम्म अच्चेति सुरप्पियं जक्खाययणं । से णं सुरप्पिए जक्खाययणे एगेणं महता वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते जहा पुण्णभद्दे जाव सिलावट्टते । तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया होत्था जाव पसासेमाणे विहरति । से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसाहस्सीणं, पज्जुण्णपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, रुप्पिणिपामोक्खाणं सोलसण्हं देवीसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर जाव सत्थवाहप्पभिईणं वेयड्ढगिरिसागरमेरागस्स दाहिणड्ढभरहस्स आहेवच्चं जाव विहरति । तत्थ णं बारवईए नयरीए बलदेवे नामं राया होत्था, महया जाव रज्जं पसासेमाणे विहरति । तस्स णं बलदेवस्स रण्णो रेवई नामं देवी होत्था सोमाला जाव विहरति । तते णं सा रेवती देवी अण्णदा कदाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ता णं०, एवं सुमिणदंसणपरिकहणं, कलातो जहा महाबलस्स, पंनासतो दातो पण्णासरायकण्णगाणं एगदिवसेणं पाणिं० नवरं निसढे नामं जाव उप्पिं पासादं विहरति । तेणं कालेणं २ अरहा अरिट्ठनेमी आदिकरे दसधणूइं वण्णतो जाव समोसरिते, परिसा निग्गया । तते णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे

'चिराईए' त्ति चिरः-चिरकाल आदिनिवेशो यस्य तच्चिरादिकम् । 'महय' त्ति 'महया हिमवंतमलयमंदरमहिंदसारे' इत्यादि दृश्यम्, तत्र महाहिमवदादयः पर्वतास्तद्वत्सारः प्रधानो यः ।



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–] दीप अनुक्रम [१-३]

समाणे हट्ठतो एतो य कुडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाणियं भेरिं तालेहि । तते णं से कुडुंबियपुरिसे जाव पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाणिया भेरी तेणेव उवा० २ तं सामुदाणियं भेरिं महता २ सद्देणं तालेति । तते णं तीसे सामुदाणियाए भेरीए महता २ सद्देण तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा देवीओ उग भाणियव्वाओ जाव अणंगसेणापामोक्खा अणेगा गणिया सहस्सा अन्ने य बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभितितो ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया जहाविभवइड्ढिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया हयगया जाव पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा० २ करतल० कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेति । तते णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेकहत्थिं कप्पेह हयगयरहपवर जाव पच्चप्पिणंति । तते णं से कण्हे वासुदेवे मज्जणघरे जाव दुरूढे अट्ठमंगलगा जहा कूणिए सेयवरचामरेहि उद्धुव्वमाणेहि २ समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव सत्थवाहप्पभितीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइं नगरिं मज्झं मज्झेणं सेसं जहा कूणिओ जाव पज्जुवासइ । तते णं तस्स निसढस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महता जण सद्दं च जहा जमाली जाव धम्मं सोच्चा निसम्म वंदइ नमंसइ २ एवं वदासी–सद्दहामि णं भंते निग्गंथं पावयणं जहा चित्तो जाव सावगधम्मं पडिवज्जति २ पडिगते । तेणं कालेणं २ अरहा अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी वरदत्ते नामं अणगारे उराले जाव विहरति । ततेणं से वरदत्ते

१ हट्ठतो य पुरिसे.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत
सूत्रांक
[–]

दीप
अनुक्रम
[१-३]

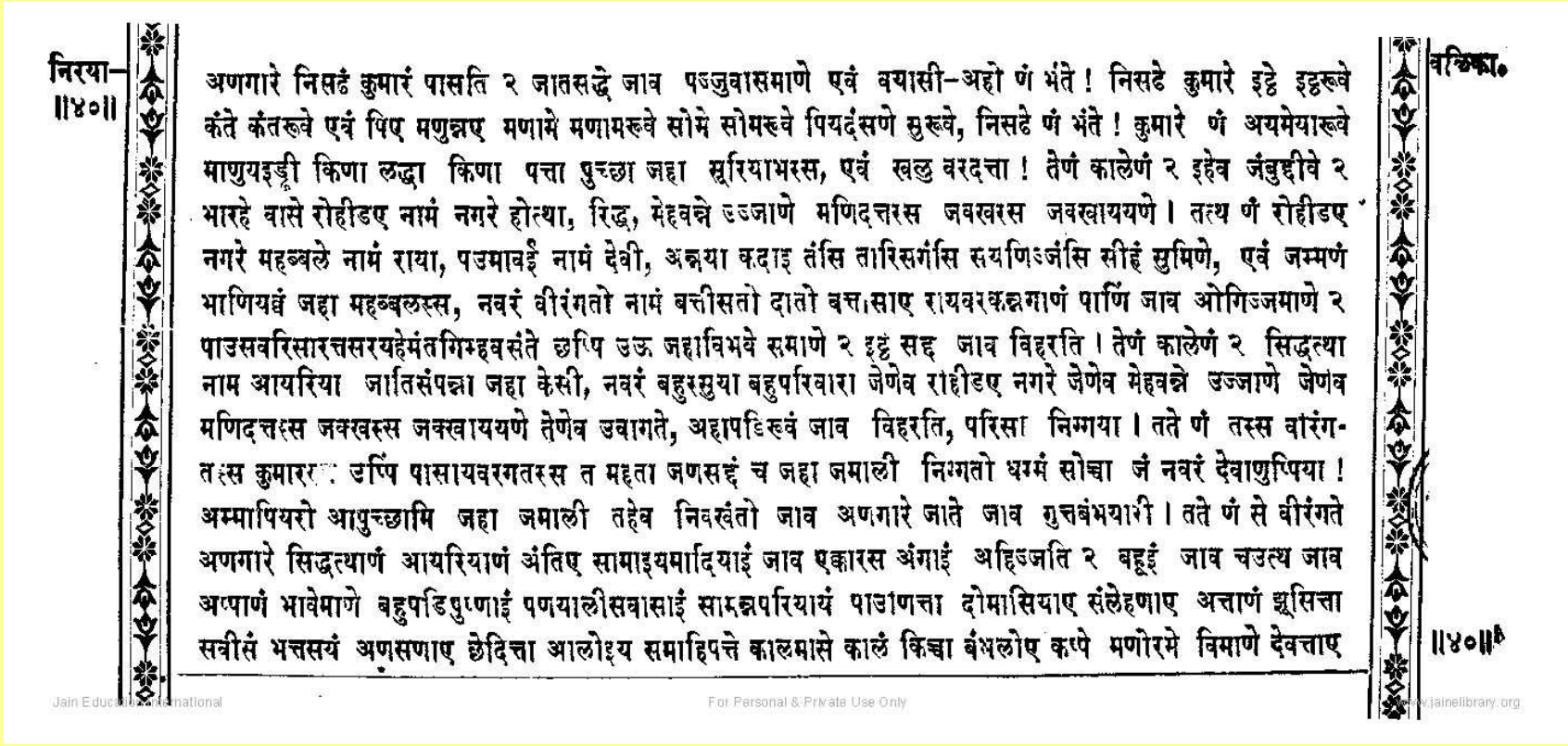



अणगारे निसढं कुमारं पासति २ जातसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी–अहो णं भंते ! निसढे कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे एवं पिए मणुन्नए मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे, निसढे णं भंते ! कुमारे णं अयमेयारूवे माणुयइड्ढी किणा लद्धा किणा पत्ता पुच्छा जहा सूरियाभस्स, एवं खलु वरदत्ता ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रोहीडए नामं नगरे होत्था, रिद्ध, मेहवन्ने उज्जाणे मणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खायथणे। तत्थ णं रोहीडए नगरे महब्बले नामं राया, पउमावई नामं देवी, अन्नया कदाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सीहं सुमिणे, एवं जम्मणं भाणियव्वं जहा महब्बलस्स, नवरं वीरंगतो नामं बत्तीसतो दातो बत्तीसाए रायवरकन्नगाणं पाणिं जाव ओगिज्जमाणे २ पाउसवरिसारत्तसरयहेमंतगिम्हवसंते छप्पि उऊ जहाविभवे समाणे २ इट्ठे सद्द जाव विहरति। तेणं कालेणं २ सिद्धत्था नाम आयरिया जातिसंपन्ना जहा केसी, नवरं बहुस्सुया बहुपरिवारा जेणेव रोहीडए नगरे जेणेव मेहवन्ने उज्जाणे जेणेव मणिदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागते, अहापडिरूवं जाव विहरति, परिसा निग्गया। तते णं तस्स वीरंगतस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगतस्स त महता जणसद्दं च जहा जमाली निग्गतो धम्मं सोच्चा जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि जहा जमाली तहेव निक्खंतो जाव अणगारे जाते जाव गुत्तबंभयारी। तते णं से वीरंगते अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अंतिए सामाइयमादियाइं जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ बहूइं जाव चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं पणयालीसवासाइं सामन्नपरियायं पाउणित्ता दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता आलोइय समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए ॥४०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [१-३]



उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं वीरंगयस्स देवस्स दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। से णं वीरंगते देवे तातो देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अणंतरं चयं चइत्ता इहेव बारवईए नयरीए बलदेवस्स रन्नो रेवईए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने। तते णं सा रेवती देवी तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सुमिणदंसणं जाव उप्पिं पासायवरगते विहरति। तं एवं खलु वरदत्ता! निसढेणं कुमारेणं अयमेयारूवे ओराले मणुयइड्ढी लद्धा ३। पभू णं भंते! निसढे कुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वइत्तए? हंता पभू! से एवं भंते भंते! इइ वरदत्ते अणगारे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तते णं अरहा अरिट्ठनेमी अण्णदा कदाइ बारवतीओ नगरीओ जाव बहिया जणवय विहारं विहरति, निसढे कुमारे समणोवासए जाए अभिगतजीवाजीवे जाव विहरति। तते णं से निसढे कुमारे अण्णया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवा० २ जाव दब्भसंथारोवगते विहरति। तते णं तस्स निसढस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्त० धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए०–धन्ना णं ते गामागर जाव संनिदेसा जत्थ णं अरहा अरिट्ठनेमी विहरति, धन्ना णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभितिओ जे णं अरिट्ठनेमीं वंदति नमंसति जाव पज्जुवासति, जति णं अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्विं नंदणवणे विहरेज्जा तेणं अहं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदिज्जा जाव पज्जुवासिज्जा। तते णं अरहा अरिट्ठनेमी निसढस्स कुमारस्स अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता अट्ठारसहिं समणसहस्सेहिं जाव नंदणवणे उज्जाणे, परिसा निग्गया, तते णं निसढे कुमारे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ० चाउग्घंटेणं आसरहेणं निग्गते, जहा जमाली, जाव

नगरनिगमसिट्ठिसेणावइसत्थवाहपभितिओ। जे णं भगवंतं वंदति। तदनु नन्दनवने उद्याने भगवान् समवसृतः।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [२३], उपांग सूत्र - [१२] "वृष्णिदशा" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [१-३]

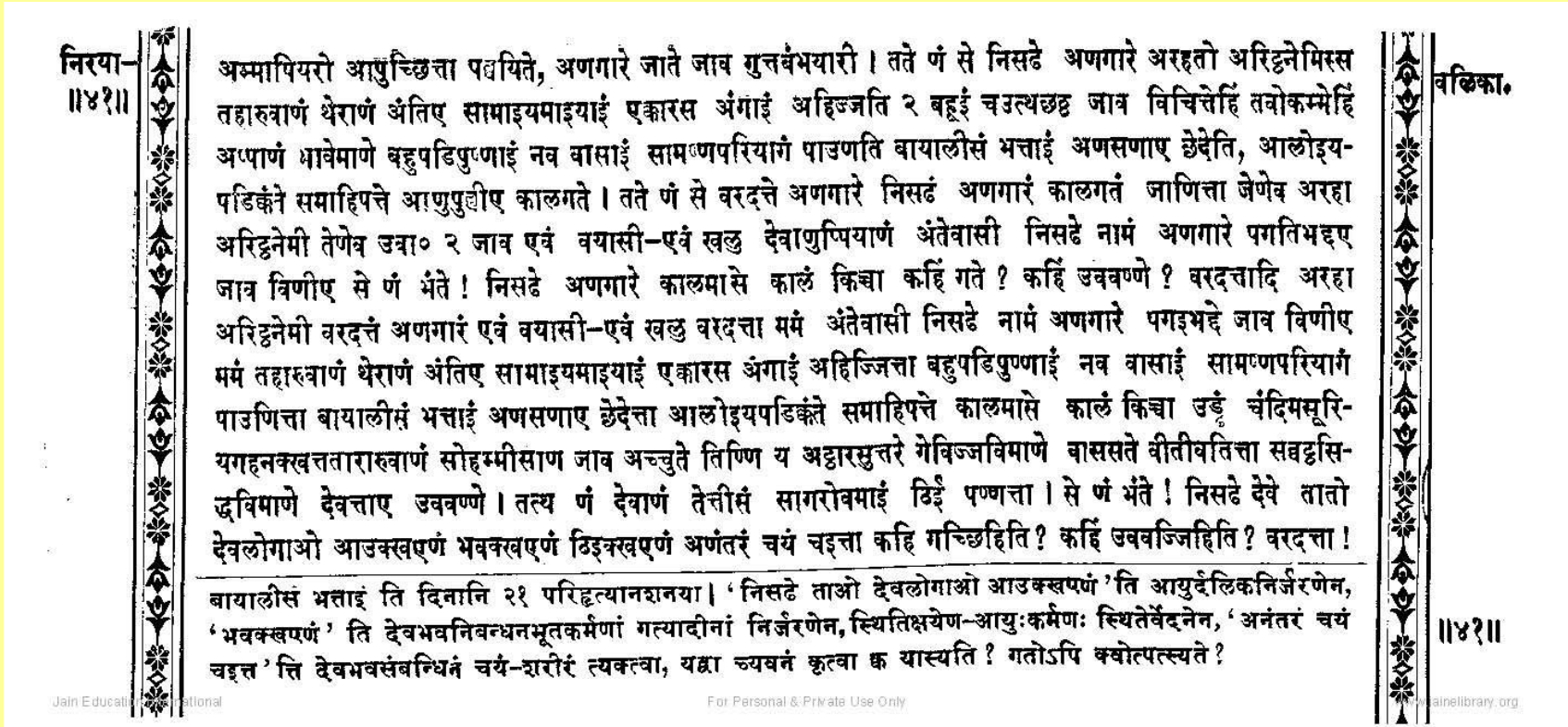

निरया- ॥४१॥

अम्मापियरो आपुच्छित्ता पव्वयिते, अणगारे जाते जाव गुत्तबंभयारी। तते णं से निसढे अणगारे अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारुवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ बहूइं चउत्थछट्ठ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं नव वासाइं सामण्णपरियागं पाउणति बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगते। तते णं से वरदत्ते अणगारे निसढं अणगारं कालगतं जाणित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवा० २ जाव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए से णं भंते! निसढे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गते? कहिं उववण्णे? वरदत्तादि अरहा अरिट्ठनेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी–एवं खलु वरदत्ता ममं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दे जाव विणीए ममं तहारुवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं नव वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरि-यगहनक्खत्ततारारूवाणं सोहम्मीसाण जाव अच्चुते तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणे वाससते वीतीवतित्ता सव्वट्ठसि-द्धविमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। से णं भंते! निसढे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति? वरदत्ता!

वह्निदशा. ॥४१॥

बायालीसं भत्ताइं ति दिनानि २१ परिहृत्यानशनया। 'निसढे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं' ति आयुर्दलिकनिर्जरणेन, 'भवक्खएणं' ति देवभवनिबन्धनभूतकर्मणां गत्यादीनां निर्जरणेन, स्थितिक्षयेण-आयुःकर्मणः स्थितेर्वेदनेन, 'अनंतरं चयं चइत्त' त्ति देवभवसंबन्धिनं चयं-शरीरं त्यक्त्वा, यत्रा च्यवनं कृत्वा क्व यास्यति? गतोऽपि क्वोत्पत्स्यते?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [–] दीप अनुक्रम [१-३]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२३], उपांग सूत्र - [१२] "वृष्णिदशा" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्तिः

इहेव जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे उन्नाते नगरे विसुद्धपिइवंसे रायकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। तते णं से उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलबोहिं बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वज्जिहिति। से णं तत्थ अणगारे भविस्सति। इरियासमिते जाव गुत्तबंभयारी। से णं तत्थ बहूइं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिस्सति २ मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसिहिति २ सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदिहिति। जस्सट्ठाए कीरति णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए जाव अदंतवणए अच्छत्तए अणोवाहणाए फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे पिंडवाउलद्धावलद्धे उच्चावया य गामकंटया अहियासिज्जति, तमट्ठं आराहेति, आराहित्ता चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति २। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महा० जाव निक्खेवओ ● एवं सेसा वि एक्कारस अज्झयणा नेयव्वा संगहणी अणुसारेण अहीणमइरित्त एक्कारससु वि ॥

॥ पंचमो वग्गो सम्मत्तो ॥

'सिज्झिहिति' सेत्स्यति निष्ठितार्थतया, भोत्स्यते केवलालोकेन, मोक्ष्यते सकलकर्मांशैः, परिनिर्वास्यति–स्वस्थो भविष्यति सकलकर्मकृतविकारविरहितया, तात्पर्यार्थमाह–सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ॥

१ उन्नाते प्र०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

● अत्र अध्ययनं -१- 'निषध' परिसमाप्तं अत्र अध्ययन २-१२ 'मायनि,वध आदि' आरब्धानि एवं परिसमाप्तानि [मूलसूत्र ४]

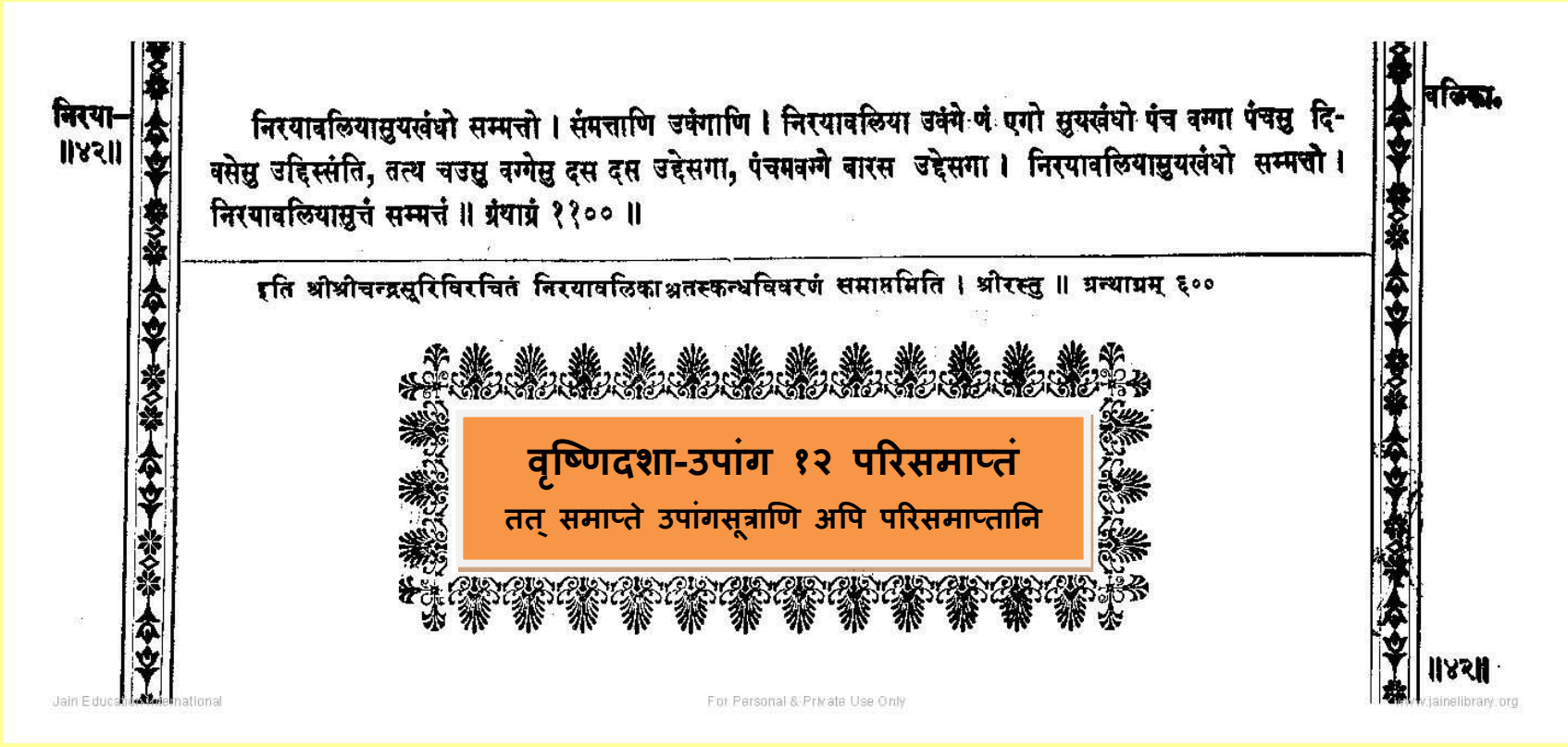

| आगम (२३) | "वृष्णिदशा" - उपांगसूत्र-१२ (मूलं+वृत्ति:)<br>अध्ययनं [२-१२] ----------------------------------------------------------- मूलं [४] |
|---|---|
| प्रत<br>सूत्रांक<br>[–]<br><br>दीप<br>अनुक्रम<br>[१-३] | मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [२३], उपांग सूत्र - [१२] "वृष्णिदशा" मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:<br><br>निरया- ॥४२॥<br>निरयावलियासुयखंधो सम्मत्तो । संमत्ताणि उवंगाणि । निरयावलिया उवंगे णं एगो सुयखंधो पंच वग्गा पंचसु दिवसेसु उद्दिस्संति, तत्थ चउसु वग्गेसु दस दस उद्देसगा, पंचमवग्गे बारस उद्देसगा । निरयावलियासुयखंधो सम्मत्तो । निरयावलियासुत्तं सम्मत्तं ॥ ग्रंथाग्रं ११०० ॥<br>वलिका॰<br><br>इति श्रीश्रीचन्द्रसूरिविरचितं निरयावलिकाश्रुतस्कन्धविवरणं समाप्तमिति । श्रीरस्तु ॥ ग्रन्थाग्रम् ६००<br><br>**वृष्णिदशा-उपांग १२ परिसमाप्तं**<br>तत् समाप्ते उपांगसूत्राणि अपि परिसमाप्तानि<br><br>॥४२॥<br>Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org |
| | **मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र २३)**<br>**"वृष्णिदशा" परिसमाप्त:** |

**नमो नमो निम्मलदंसणस्स**

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

**23**

पूज्य अनुयोगाचार्य श्रीदानविजयजी गणि संशोधित: संपादितश्च

**"वृष्णिदशा-उपांगसूत्र"** [मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:]

**(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)**

# मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

**"वृष्णिदशा" मूलं एवं वृत्ति:" नामेण**

# परिसमाप्त:

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'